# Shodh Shree

(International Referred Journal of Multidisciplinary Research)

# शोध श्री

Issue - 4 October-December 2017 RNI No. RAJHIN/2011/40531

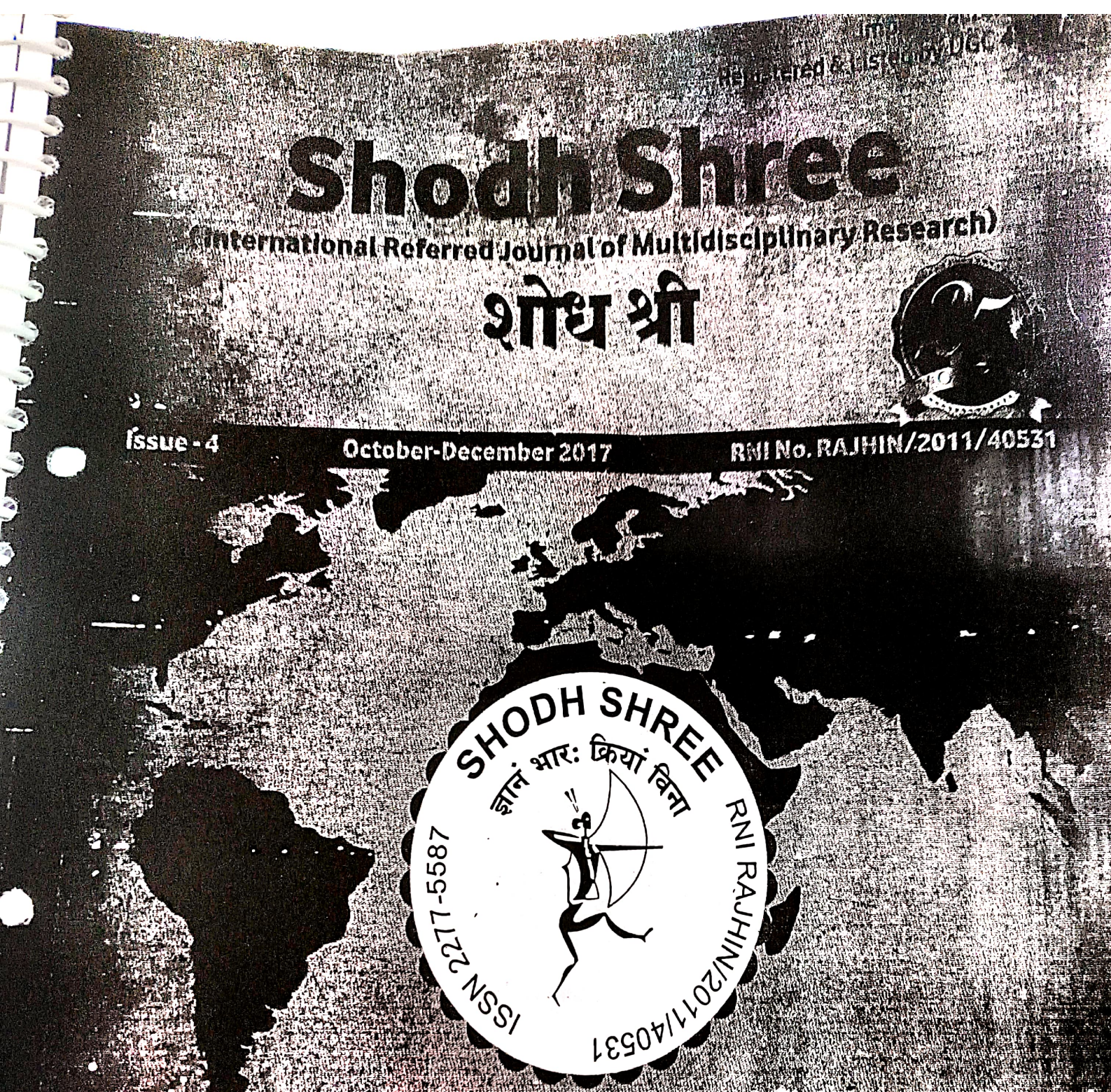


CHIEF EDITOR
Virendra Sharma

EDITOR
Dr. Ravindra Tailor

# Shodh Shree

(International Referred Journal of Multidisciplinary Research)

**Virendra Sharma**
**Chief Editor**
Government Girls P.G. College,
Ajmer

**Dr. Ravindra Tailor**
**Editor**
Shodh Shree,
Jaipur

## Editorial Board

**Prof. H.S. Sharma (Retd.)**
University Of Rajasthan, **Jaipur**

**Prof. T.K. Mathur (Retd.)**
M.D.S. University, **Ajmer**

**Prof. Ravindra Kumar Sharma**
Kurukshetra University, Kurukshetra **(Haryana)**

**Sarah Eloy**
Museum The House of Alijn, **Belgium**

**Prof. B.P. Saraswat**
Dean of Commerce
M.D.S. University, **Ajmer**

**Prof. Pushpa Sharma**
Kurukshetra University, Kurukshetra **(Haryana)**

**Dr. Rajesh Choudhary**
Deputy Director (Research)
Indian Council of Historical Research, **NewDelhi**

**Dr. Avdhesh Kumar Sharma**
BBD Govt. PG College, Chimanpura

## Advisory Board

**Prof. S.N. Tailor (Retd.)**
S.D. Government P.G. College, **Beawar**

**Prof. S.P. Vyas**
Jainarain Vyas University, **Jodhpur**

**Dr. Mahesh Narayan**
Archivist (Retd.)
National Archives of India, **NewDelhi**

17. वैश्विक परिप्रेक्ष्य में साहित्य और समाज का अंतसम्बन्ध (डॉ. मधु संधु की कहानियों के संदर्भ में) 82-86
डॉ. दीप्ति, अमृतसर (पंजाब)
18. ग्रामीण महिलाओं का यथार्थ : एक विवेचन (गुर्जर महिलाओं के विशेष सन्दर्भ में) 87-90
डॉ. कैलाश चन्द गुर्जर, जयपुर
19. नागार्जुन के उपन्यासों में दलित चेतना 91-93
जितेन्द्र कुमार बरबड़, उदयपुर
20. 19 वीं शताब्दी में कन्यावध एवं सती प्रथा उन्मूलन के प्रयास (मेवाड़ के सन्दर्भ में) 94-99
प्रीति मीना, जयपुर
21. इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता : संवेदना के नए आयाम (कवि संजय कुंदन, हरिओम राजोरिया, हरे प्रकाश उपाध्याय एवं कवयित्री निर्मला पुतुल के विशेष सन्दर्भ में) 100-102
अंसारी मोहम्मद इकराम, पाटन (गुजरात)
22. अंतर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा स्थापना में संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका 103-108
दिनेश कुमार जांगिड़, जयपुर
23. हिन्दू कोड बिल और डॉ. भीमराव अम्बेडकर 109-111
विरेन्द्र सिंह गौड़, जोधपुर
24. कौटिल्य के अर्थशास्त्र में चिकित्सा पद्धति 112-114
डॉ. सुनिता मीना, सवाई माधोपुर
25. कुण्डलिनी शक्ति का स्वरूप : तन्त्र शास्त्र की दृष्टि से 115-118
प्रीति सिंह, जयपुर
26. उत्तराखण्ड की सामरिक स्थितिः चीन व नेपाल के परिप्रेक्ष्य में 119-123
डॉ. सुरेन्द्र सिंह कुंवर, गढ़वाल (उत्तराखण्ड)
27. Women as Catalysts of Change in The Social Stratification in Ancient India (With Special Reference to The Sudra Women) 124-130
Dr. Manorama Upadhyaya, Jodhpur
28. Post Modernist Artifice in The Novels of Namita Gokhale 131-134
Rasmi Agrawal, Kota
29. Ramacharitmanas in Multiple Garbs 135-137
Dr. Charulata Verma, Shriganganagar & Dr. Dinesh Kumar Charan, Churu
30. Impact of Quality of Services in Brand Image in Banking Industry 138-143
Dr. Asha Sharma, Delhi
31. Regional Planning in Rajasthan: A Micro Level Study of Deoli Tehsil 144-151
Dr. Sandeep Yadav & Nikita Mangal, Bundi
32. Understanding Community Policing: Community Mobilization for Crime Prevention in India 152-158
Dr. Shalini Chaturvedi & Rahul Verma, Jaipur
33. Population Density: Types & Models in The Cities of Rajasthan 159-164
Dr. Jaya Bhandari, Jodhpur
34. Role of Panchayati Raj Institutions in Education and Development of Rural India 165-170
Dr. Meenkashi Yadav, Kota
35. Industrial Scenario of Pali City 171-178
Deepak Sharma, Jaipur

# वैश्विक परिप्रेक्ष्य में साहित्य और समाज का अंर्तसम्बन्ध (डॉ. मधु संधु की कहानियों के संदर्भ में)

**डॉ. दीप्ति**
सहायक प्रोफेसर, हिन्दू कॉलेज, अमृतसर (पंजाब)
shodhshree@gmail.com

***शोध सारांश***

*साहित्य और समाज का अर्न्तसंबंध जगविदित है। प्रस्तुत शोध पत्र में वैश्विकता के दौर में डॉ. मधु संधु की कहानियों के सन्दर्भ में समाज के बदलते स्वरूप का प्रतिबिम्ब दिखाने का प्रयास किया गया है। 21 वीं सदी के समाज के परिप्रेक्ष्य में जहां प्रणय और परिणय की ठावना को बड़े सटीक रूप से अभिव्यक्त किया गया है, वहीं आधुनिक नारी का पूर्ण सशक्त चित्र अभिव्यक्त है। प्रस्तुत शोध पत्र में समाज के अभिन्न अंग वू संचेतना और दलित समस्या के साथ आज के युवा वर्ग के प्रवास के प्रति आर्कषण को भी रेखांकित किया गया है।*

***संकेताक्षरः*** *प्रणय और परिणय की भावना, सशक्त नारी, दलित समस्या, वू संचेतना, युवा वर्ग का प्रवास के प्रति आर्कषण।*

साहित्य का स्रष्टा होने के नाते अपने दायित्व का ईमानदारी व कुशलतापूर्वक निर्वाह करना साहित्यकार का कर्त्तव्य होता है। साहित्यकार समाज के सैद्धांतिक और व्यावहारिक सामाजिक मूल्यों को ग्रहण करके यथातथ्य/कलागत रूप में साहित्य में रूपायित करता है। इस प्रकार वह रचनाओं के माध्यम से समाज की घटनाओं, क्रियाकलापों इत्यादि से पाठक को अवगत करवाता है। अतः साहित्य और समाज का अंतर्सबंध जगविदित है। आज का हिन्दी साहित्यकार अपनी रचनाओं में 21वीं सदी के समाज का बदलता स्वरूप प्रस्तुत करने में सतत प्रयासरत है। आधुनिक हिन्दी साहित्य की सशक्त हस्ताक्षर डॉ. मधु संधु ने हिन्दी साहित्यकारों में सृजनशीलता व सक्रियता से विशेष पहचान बनाई है। बहुमुखी व्यक्तित्व की स्वामिनी डॉ. मधु संधु लगभग 36 वर्षों से अध्यापन काल के दौरान हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि में अभूतपूर्व योगदान देती रही है तथा आज भी निरन्तर साहित्य-सृजन के द्वारा हिन्दी साहित्य की सेवा के लिये कटिबद्ध है। लेखिका ने अपनी रचनाओं में 21वीं सदी के परिवेशगत सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत बदलते जीवन मूल्यों, समाज में व्यक्तियों के परिवर्तित संबंधों, समाज की बदलती संरचना का सूक्ष्म पैनी दृष्टि से विश्लेषण कर उसे कलमबद्ध किया है। लेखिका ने दो कहानी-संग्रहों, 3 सम्पादित ग्रंथों और 16 शोध-ग्रंथों की रचना द्वारा हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि में अमूल्य योगदान दिया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में उनके दो कहानी-संग्रहों में से कतिपय चयनित कहानियों (आहुति, तुषाराघात, कुमारिका गृह, लिव इन, आवर्तन, नियति, लिटल गर्ल, अभिसारिका, फ़ैक्चर) में वैश्विकता के दौर में साहित्य और समाज के अंतर्सबंधों को खोजते हुए समाज के बदलते स्वरूप का प्रतिबिम्ब दिखाने का प्रयास किया गया है।

समाज की लघुतम इकाई मानव है। मानव की सभी आवश्यकतायें किसी न क्रिसी रूप में परिवार और समाज से जुड़ी होती हैं। भावनायें, विचार और क्रियाकलाप जीवन में व्यक्तिगत कुछ नहीं होता, सभी कुछ समाज से जुड़ा होता है। प्रणय और परिणय संबंधों के प्रमुख स्तम्भ है। प्रणय और परिणय की भावना समाज में पुरुष और नारी के सम्बन्धों के जुड़ाव की मुख्य कड़ी है। प्रस्तुत शोध-पत्र में साहित्य और समाज के अंतर्सबंधों को खोजते हुए प्रणय और परिणय की भावना को 21वीं सदी के समाज के परिप्रेक्ष्य में 'आहुति' और 'तुषाराघात' कहानियों के सन्दर्भ में बड़े सटीक रूप से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है।

कतिपय लोभी ससुराल वालों द्वारा दहेज की बलिवेदी में बहुओं की जबरन आहुति दी जा रही है। यह विकराल समस्या आज भी हमारे समाज में बड़ी चुनौती के रूप में विद्यमान है। 'आहुति' कहानी में लेखिका ने परिणय अर्थात् विवाह के पश्चात् 'अपूर्वा' नामक किशोरी के विवाह के नाम पर दी गई आहुति का यर्थाथांकन किया है। प्रस्तुत कहानी में नेशनल लेवल की टैनिस प्लेयर 'अपूर्वा' बचपन से ही लड़कों सी बिंदास लड़की के रूप में जीवन जीने वाली दृष्टिगोचर होती है। वह पढ़ाई अर्थात् एम.ए. में दाखिले के दौरान घरवालों की मर्जी के आगे झुककर शादी के लिये स्वीकृति दे देती है। आरम्भ में शादी की तैयारियों में खुश व रोमांचित अपूर्वा विवाह के पश्चात् ससुराल वालों के वास्तविक घिनौने रूप से परिचित होती है। फेरे के समय माँ ने भी मायके में उसके मुरझाए चेहरे पर ध्यान नहीं दिया । एक महीने बाद मायके में अपूर्वा के साथ आए पति ने जब लोन के बहाने उसके पिता से तीन लाख का चैक लिया तो उसके सब्र का बाँध टूट गया । क्रोधित अपूर्वा ने अपनी माँ को सब बता दिया, ''अपनी एम.ए.पास सास की दनदनाती आवाज में गूँजते अभद्र श्लोक । एम.बी.बी. एस. ससुर की तानाशाही। पति का दोगलापन, बहरापन और अपनी एक मुफ्त की आया अथवा मेडसर्वेंट की स्थिति।''[1] माँ ने समझा-बुझाकर दामाद के साथ अपूर्वा को ससुराल भेज दिया, जहाँ उन दोनों के बीच चैक को लेकर झगड़ा हुआ और पति ने उसे मारा भी। चार दिन बाद मायके वालों को फोन पर सूचित किया गया कि अपूर्वा ने कुछ खा लिया है और वह बेहोशी की हालत में सिविल अस्पताल में है। माँ-बाप अपूर्वा को पी.जी.आई में दाखिल करवाकर उसके बचने की प्रार्थना करने लगे । होश आने पर अपूर्वा भी माँ से उसे बचाने की विनती करने लगी । पर भाग्य की विडम्बना कि अपूर्वा जिन्दगी की लड़ाई हारकर निर्दयी दुनिया को अलविदा कह गई । माँ जहां इस सदमे में थी, वहीं पिता को गम से हार्ट-अटैक आ गया । ''अपूर्वा के ससुराल वालों पर कोर्ट-केस किया गया, किन्तु यह इन्टर-स्टेट का मामला था। बड़ा कम्पलीकेटेड । उन्हें सब विद-ड्रा करना पड़ा।''[2]

युवा पीढ़ी प्रणय भाव के प्रति जल्दी आकर्षित होती है। प्रणय भाव यदि कतिपय युवाओं के लिये सुख व आनंद की वर्षा करता है तो कुछ नौजवानों के लिये बेवफाई का अभिशाप बन जाता है। 'तुषाराघात' कहानी में लेखिका ने पुरुष के धोखे की शिकार 'मलयका' नायिका की मानसिक यातना एवं पीड़ा का मर्मस्पर्शी अंकन किया है। जीवन को जी भर लेने की अभिलाषा रखती थी। पढ़ाई और किचन के कामों में परफैक्ट मलयका का ऐरोबिक्स के इन्स्ट्रक्टर विमल से अफेयर हो जाता है। प्रेम के नशे में मदमस्त मलयका को माता-पिता की अप्रत्यक्ष स्वीकृति भी मिल जाती है परन्तु कुछ समय पश्चात् मलयका विमल के व्यस्त होने के बहाने से परेशान हो जाती है। तभी उसे पता चलता है कि ''विमल ने पड़ोस की, अपने से छह वर्ष बड़ी, चार वर्ष की बच्ची की मां, फैक्टरी ओनर, खूबसूरत अतुला से शादी कर ली है। मलयका के व्यक्तित्व का सारा संयम एक ही झटके में, यौवन के प्रथम तुषाराघात से ही चरमरा गया।''[3] बेवफाई के आघात को ना सहते हुये अपूर्वा मनोवैज्ञानिक समस्या से ग्रस्त होकर अस्पताल के कार्डआलॉजी विभाग में मरीज बनकर रह जाती है।

इस प्रकार 'आहुति' और 'तुषाराघात' कहानियों में परिणय और प्रणय संबंधों में प्रेमी के धोखे की शिकार प्रेमिका और लोभी, निर्दयी ससुरालवालों द्वारा नव-विवाहिता को मौत की ओर धकेलने के कटु यथार्थ को उकेरा गया है। दोनों कहानियों में नागर चेतना और नागर संवेदना का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वैश्वीकरण ने व्यक्ति को बाज़ारवाद की ओर उन्मुख करके भौतिकवादी बना दिया है जिसके परिणामस्वरूप आधुनिक भौतिकवादी लोग किसी की संवेदनाओं की उपेक्षा करने के साथ-साथ किसी की जान की भी परवाह नहीं करते।

'दीपावली अस्पताल.कॉम की कहानियों के अगले पड़ाव में लेखिका की भूमंडलीकरण के दौर की स्त्री अधिकार प्राप्ति के लिये दौड़ना-भागना बन्द कर देती है। उसके आत्मबल और आत्मचिन्तन ने उसे अधिकार सम्पन्न बना दिया है। आज की नारी परम्परा या व्यवस्था जैसे बड़े झूठों को पहचानकर उनसे किनारा कर लेती है। जैसे ऊषा राजे सक्सेना की 'आंटोप्रेन्योर' में पूर्ण सशक्त स्त्री का चित्रण है, वैसे ही 'कुमारिका गृह' और 'लिव इन' में अपने-आप में संपूर्ण नारी का सशक्त रूप दृष्टिगोचर होता है। लेखिका ने इन कहानियों में वर्तमान सामाजिक व्यवस्था और साहित्य के अंतर्संबंधों को खोजते हुए 21वीं सदी में नारी सशक्तिकरण पर प्रकाश डालते हुए पूर्ण आत्म-विश्वास से निर्णय लेने की क्षमता से युक्त 'स्व' के प्रति जागरूक नारी को चिन्हित किया है।

'कुमारिका गृह' कहानी में पारिवारिक उपेक्षाओं और अपेक्षाओं के अभिशाप को झेलने वाली 'पुण्या' को

कुमारिका गृह में आने के पश्चात् जीवन को जी भर जीने की दृढ़ प्रेरणा मिलती है। वहां रहने वाली "सभी कुमारिकाओं के हाथ में अर्थ की जादुई छड़ी और मन में जीवन को जी भर लेने की ललक है। उनके पास साँस लेने के लिये ढेर सारी ब्रीथिंग स्पेस है।"[4] पूनम सर्जन है तो इन्द्राणी कम्प्यूटर की कक्षाएँ अटैंड करती और कम्प्यूटर सैंटर की योजना बनाती। "कुमारिका गृह की ये संरक्षक रह चुकी महिलाएँ हैं, जिन्हें किसी संरक्षण की आवश्यकता नहीं।"[5] इस प्रकार 21वीं सदी की 'कुमारिका गृह' की नायिका प्रणय और प्रेम से ऊपर उठकर घुटघुट कर जीने और स्वप्नभंग जैसी स्थितियों से छुटकारा पाकर सशक्त नारी के रूप में जीने का एक नया मकसद या विकल्प ढूँढ़ती है। प्रस्तुत कहानी में परिवार द्वारा उपेक्षित नारियां बिना किसी संरक्षण के दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ जीवन ातीत करती हुई सशक्त नारी का रूप उजागर करती है। 'लिव इन' कहानी में लेखिका ने 21वीं सदी के नारी सशक्तिकरण का एक नवीन पहलू प्रस्तुत किया है। आज आधुनिक नारी प्राचीन परंपरागत रूढ़ियों को त्यागकर 'विवाह' के बंधन में ना बंधकर 'लिव इन' रिलेशनशिप में रहना पसंद करती है। कहानी के दोनों पात्र प्राइवेट कम्पनियों में कार्यरत थे । "लिव-इन' में रहना उन्हें अच्छा लगता था और सौभाग्य से दोनों को अच्छे साथी भी मिलते रहे थे। ...इस प्रकार दोनों पात्र गृहस्थ के कारावास, सात फेरों वाला अटूट बंधन और बंधी नौकरी की बासी रुटीन से दोनों बहुत आगे निकल चुके थे।"[6]

दलित वर्ग समाज का सदा से अभिन्न अंग रहा है। भारतीय समाज में दलित समस्या सदैव मुँह खोले खड़ी रही है। दलितों का अपमान, मज़ाक उड़ाना, उनके प्रति घृणा और द्वेष रखना आम बात है किन्तु स्थितियाँ यहीं तक नहीं ठहरती । आज दलितों ने भी अनेक स्थलों पर अपनी विशेष पहचान या अस्तित्व बनाया है । एक समय था कि दलित शोषण की बात की जाती थी । आज 21वीं सदी के वैश्विक दौर में एक समय यह भी आ गया है कि दलित द्वारा दलित के शोषण की बात की जा रही है। 'आवर्तन' कहानी में 'ज्ञानी' नामक पात्र परिवार को बदहाली से खुशहाली का जीवन देने की आशा में गाँव से शहर में बसकर दर्जी की दुकान खोल लेता है। उसका बेटा चानन सिंह परिश्रम और लगन के बल पर एम.ए. करके सिफारिश से विश्वविद्यालय में नौकरी प्राप्त कर लेता है और पढ़ी-लिखी लड़की रुही से कोर्ट मैरिज कर उसकी भी सिफारिश से नौकरी लगवा देता है। आर्थिक तौर पर दलित परिवार सुखी व खुशहाल जीवन व्यतीत करता है। "प्रसन्नता इस बात की थी कि .... शहर में जात कौन पूछता है। जानकर भी लोग इग्नोर करते हैं। लेन-देन, खान-पान सब बराबर रहता है।"[7] कभी स्वयं आर्थिक अभावों में जीवन व्यतीत करती जमींदारिन के यहाँ गोबर संभालने का काम करने वाली चानन की माँ अमीर होने पर गरीब महरियों के प्रति अमानवीय दृष्टिकोण रखती हुई वैसा ही कहर बरसाती है। महरी द्वारा पति के ईलाज के लिये छोटी बेटी से पैसे मंगवाने पर रूपये न देकर रूखे व्यवहार से घर का सारा काम करवाती है। पैसों का घमण्ड किसी के मन से दया भाव खत्म करने के लिये पर्याप्त होता है। "यह आवर्तन ठीक वैसे ही था, जैसे पहले बीबी के साथ होता था । बस स्थान और व्यक्ति बदल गये थे।"[8] आज दलितों ने भी चाहे अनेक स्थलों पर अपनी विशेष पहचान बना ली है किन्तु सत्य तो यह है कि दलित ही दलित की वेदना को समझ नहीं पाता ।

लेखिका ने कहानियों में 21वीं सदी के वैश्विक समय के समाज के महत्त्वपूर्ण अंग युवा वर्ग के प्रवास के प्रति आकर्षण को भी रेखांकित किया है। प्रवास के स्वप्न/मायाजाल आज के युवावर्ग का झिलमिलाता सच है। 'नियति' कहानी का नायक सफल डॉक्टर के लक्ष्य को पूरा करने के लिये एम.डी. करने विदेश चला जाता है। जहां शादी भी करता है और एक सुन्दर सी बच्ची का भी पिता बनता है परन्तु काम के दबाव और सफलता पाने की सनक में संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। "उन तनाव भरे दिनों में पत्नी का सुख जाना ही नहीं और तब डायवोर्स झेलना पड़ा । बच्ची माँ, भाई-भाभी के यहीं रही।"[9] प्रवास के मायाजाल में उलझकर पारिवारिक संबंधों की टूटन का दंश उसे झेलना पड़ता है। अकेलेपन से ग्रस्त नायक नन्हीं बच्ची की स्कूल अध्यापिका के प्रति आकर्षित होता है परन्तु उसके शादीशुदा होने का सत्य जानकर दुःखी हो जाता है। तत्पश्चात् लम्बी पढ़ाई पूरी करने के पश्चात् सैटल्ड सफल डॉक्टर के रूप में पहचान बनाने के पश्चात् भी "घर में उसका अस्तित्व बियरर चैक का पर्याय बन गया। --- आज पारिवारिक सदस्य दो मीठे बोलों का अहसान करने में भी कतराने लगे । ---- सब उससे ऊब चुके हैं।"[10]

'लिटल गर्ल' कहानी में भी प्रवास के आकर्षण का युग यथार्थ चित्रित है। प्रस्तुत कहानी में पिता के विदेश जाने के पश्चात् उसकी नन्हीं लड़की के अकेलेपन और उसके अपने पिता से अलगाव के दर्द को यथार्थ रूप में अंकित किया गया है। वर्तमान समाज के बहुत से नौजवान प्रवास

ISSN 2277-5587

यह हमारे वर्तमान समाज का कटु सत्य है । अतीतजीवी लिट्ल गर्ल अक्सर पिता के साथ बिताए यादगार लम्हों में खो जाती है। कभी वह विदेश में रहते अकेले पिता के लिये चिंतित होती है तो कभी प्रवासी पिता द्वारा वर्णित अत्याधुनिक मानवीय जीवन के लिए अपेक्षित संसाधनों की तुलना अपनी स्थानीय चीज़ों और सुविधाओं से करती है: पिता जब कहते हैं, "इतनी सुंदर ज़िन्दगी कतरा-कतरा संजोने लायक है .... तो उदास गर्ल सपनाती आँखों से कहती है, "क्या जुड़ता होगा पापा, कोई सब - वे मेरे देश तक, मेरे घर तक क्यों नहीं आता ।"[11] समय बीतने के पश्चात् लिट्ल गर्ल बड़ी होकर यंग गर्ल बन जाती है जो अतीत में नहीं वर्तमान में जीने में विश्वास करने लगती है। यौवन की दहलीज़ पर अब यंग गर्ल को पापा की स्मृतियाँ नहीं सताती बल्कि उसे नये सपनों की दिशाएं मिलती हैं तथा उसके संगणक का आउटबॉक्स भी पिता की ई-मेल पढ़ने की अपेक्षा कहीं और ही खुलने लगता है। इस प्रकार वैश्वीकरण का प्रभाव हमें भारतीय समाज पर भी स्पष्ट परिलक्षित होता है।

अतीत से चिपकना और चिपके रहना वायवी (काल्पनिक) मूल्य हो सकता है जबकि 'लिट्ल गर्ल' का जीवन यथार्थ यहीं कहता है कि आउटबॉक्स को कहीं ओर खुलना है। मुड़-मुड़कर पीछे नहीं देखा जा सकता अथवा 'नियति' के नायक की तरह जीवन अवरुद्ध हो जाएगा और रुकने का नहीं बल्कि आगे बढ़ने का नाम ही तो ज़िन्दगी है। वैश्विकता भी जीवन सत्यों से मुँह नहीं चुरा सकती। साहित्य और समाज के अंतर्संबंधों को खोजते हुए समाज के महत्त्वपूर्ण अंग वृद्ध संचेतना की उपेक्षा नहीं की जा सकती। लेखिका की वृद्ध संचेतना से जुड़ी दोनों कहानियाँ 'अभिसारिका' और 'फ़ैक्चर' मूल्य चेतना का संदेश देती है। लेखिका ने 'अभिसारिका' में जहाँ जीवन का कटु यथार्थ प्रस्तुत किया है, वहीं 'फ़ैक्चर' में आम आदमी की संवेदनशीलता को चित्रित किया है। 'अभिसारिका' में "साठ वर्षीया पत्नी छोटे बेटे के पास और उसका तिरसठ वर्षीय पति पिछले पाँच वर्षो से बड़े बेटे के पास रहते हैं।"[12] कभी अवसर मिलने पर दोनों मिलकर सार्थक समय व्यतीत करते हैं। प्रस्तुत कहानी में बच्चों को आजीवन स्नेह और संरक्षण देने वाले वृद्ध दम्पति को बुढ़ापे में अलग करने की यथार्थ समस्या प्रस्तुत की गई है। लेखन यात्रा के अगले पड़ाव में लेखिका 'फ़ैक्चर' कहानी में साकारात्मक सामाजिक मूल्य परिलक्षित होता है। प्रस्तुत कहानी में वृद्ध के अकस्मात फ़ैक्चर का शिकार होने के किया गया है। इस कहानी में पूरा परिवार अस्वस्थ वृद्ध पिता के इर्द-गिर्द घूमता है। पत्नी दिन-रात उनकी सेवा में उपस्थित रहती। "बेटा सुबह - शाम पास बैठ घंटा भर इधर-उधर की बातें करने लगा था। बहू ने घर के सारे कामकाज की ज़िम्मेदारी संभाल सास को छोटे-मोटे झंझटों से मुक्त कर दिया था। बेटी हर शनि-इतवार चक्कर लगा जाती। .... कभी-कभी तो उन्हें बीमारी भी वरदान लगने लगती ।"[13] इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में वृद्ध के प्रति परिवार के संरक्षण के गहरे बोध स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं।

लेखिका की उपरोक्त कहानियों में समकालीन समाज का बदलता स्वरूप स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है। लेखिका की 'लिव इन' में रहने वाली स्त्री प्रेमचन्द की 'मिस पदमा' की तरह लुटी-पिटी, बेचारी - दुखियारी नहीं बल्कि उसने अपने लिये कुमारिका गृह का सृजन कर लिया है। उनके वृद्ध भीष्म साहनी की 'चीफ की दावत' की माँ की तरह बरामदों-गलियारों में नहीं भटक रहे, न ही ऊषा प्रियवंदा की 'वापसी' के रिटायर्ड पिता की बेचारगी झेल रहे हैं । उनके साकारात्मक सामाजिक मूल्यों ने अस्वस्थ पिता को 'फ़ैक्चर' में परिवार का केन्द्रबिन्दु बना दिया है। 'अभिसारिका' में अलग-अलग जीने को विवश दम्पति की व्यथा के वृतांत से लेखन यात्रा के अगले पड़ाव 'फ़ैक्चर' में वृद्ध नायक की रुग्णावस्था में सारे परिवार के उसके इर्द-गिर्द घूमने, प्यार व उसे संरक्षण देने का सुखद अहसास मिलता है। इस प्रकार साहित्य और समाज के अंतर्संबंधों को खोजती लेखिका की कहानियों में जहां 21वीं शती के समाज का यथार्थ व उसका बदलता स्वरूप स्पष्ट परिलक्षित है वहीं इनमें युग यथार्थ को उकेरने की शक्ति के साथ-साथ कला भी दृष्टिगोचर होती है। इन कहानियों में हाशिये के लोगों की प्रभावशाली उपस्थिति भी है और संक्रमणशील पात्रों के सृजन की क्षमता के साथ-साथ इन सबको उकेरने वाली सर्जनात्मक भाषा भी।

***सन्दर्भ ग्रंथ सूची***


1. *डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, आहुति, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 42*
2. *डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, आहुति, (दल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 43*
3. *डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, तुषाराघात, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 52*

4. डॉ. मधु सन्धु, दीपावली अस्पताल.कॉम, कुमारिका गृह, (नई दिल्ली : अयन प्रकाशन, 2015), पृ. 12
5 डॉ. मधु सन्धु, दीपावली अस्पताल.कॉम, कुमारिका गृह, (नई दिल्ली : अयन प्रकाशन, 2015), पृ. 14
6 डॉ. मधु सन्धु, दीपावली अस्पताल.कॉम, लिव इन, (नई दिल्ली : अयन प्रकाशन, 2015), पृ. 128
7 डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, आवर्तन, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 36
8 डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, आवर्तन, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 38
9 डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, नियति, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 16
10 डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, नियति, (दिल्ली : शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 18
11 डॉ. मधु सन्धु, नियति और अन्य कहानियाँ, लिटल गर्ल, (दिल्ली: शब्द संसार प्रकाशन, 2001), पृ. 14
12 डॉ. मधु सन्धु, दीपावली अस्पताल.कॉम, अभिसारिका, (नई दिल्ली : अयन प्रकाशन, 2015), पृ. 103
13 डॉ. मधु सन्धु, दीपावली अस्पताल.कॉम, फ्रैक्चर, (नई दिल्ली: अयन प्रकाशन, 2015), पृ. 25